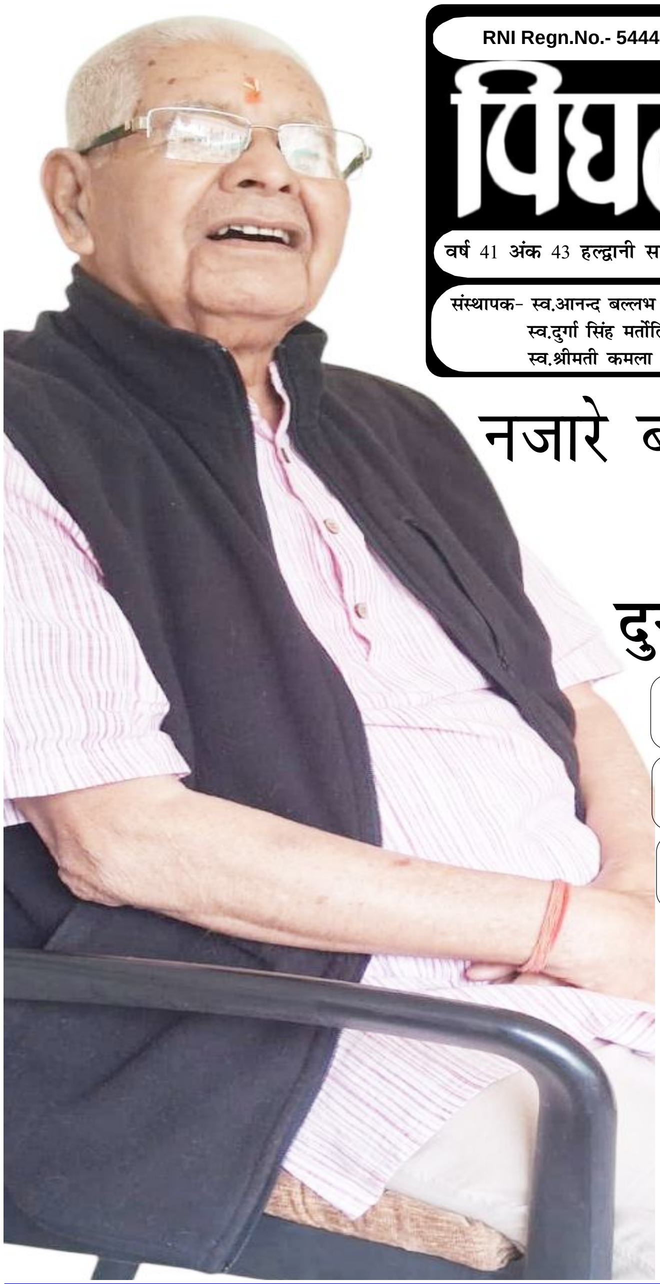

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 43 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 30 मार्च 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

नजारे बदले लेकिन नजर में वही हैं

एन.सी.तिवारी से बातचीज

दुर्गा-आनन्द स्मृतियों में हर वक्त

एनटीडी अल्मोड़ा में था जोहारी भाईयों का मुख्य केन्द्र

सत्यवान सिंह, पुष्कर सिंह, उत्तम सिंह सब अच्छे साथी रहे हैं

हल्द्वानी में रामपुर तिराहा काण्ड कराने की पूरी साजिश थी

1973 में पहली सोपस्टोन इंडस्ट्रीज छोटी मुखानी हल्द्वानी में लगी

2001 में यूपी से अलग उत्तराखण्ड व्यापार मण्डल बनाया गया

जमरानी आन्दोलन के क्रम में पीआईएल डाली, विभाग को जुर्माना पड़ा था

कार्यालय प्रतिनिधि

यह सच्चाई है कि सुख-दु:ख के साथी और समय हर हमेशा मस्तिष्क में छाए रहते हैं। वर्तमान की दिखलावटी दुनिया में भले ही बहुत रंगीन नजारे खुशनुमा दिखते होंगे लेकिन इनकी रंगीनियत वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए। जीवन के गहरे अनुभव और समाज में हमेशा सक्रियता निभाने वाले श्रीमान नवीन चन्द्र तिवारी (एन.सी.तिवारी) जीवन के उत्तरार्द्ध में भी समाज के लिये जीवट बने रहने का जोश अपने साथियों और युवाओं को दिलाते हैं। हल्द्वानी के जगदम्बानगर निवासी तिवारी जी की यादों में अल्मोड़ा से लेकर हल्द्वानी तक लम्बा सफर है जिसमें नजारे बदले लेकिन नजर में वही हैं। बातचीज में वह कहते हैं- 'दुर्गा-आनन्द स्मृतियों में हर वक्त हैं।' 'पिघलता हिमालय' की स्थापना के समय और उससे पहले से ही इसके संस्थापक स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया और स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती के साथ जिस प्रकार की प्रगाढ़ता इनकी रही है वह परिवार के सयाने की ही हो सकती है।

अल्मोड़ा के शैल ग्राम निवासी श्रीबल्लभ तिवारी के सुपुत्र थे- कृष्णानन्द तिवारी। ये परिवार मूल रूप से सोमेश्वर के बेगनिया ग्राम का हुआ। माता दुर्गा देवी और पिता कृष्णानन्द जी के परिवार में 8 सन्तानें हुईं, जिनमें सबसे छोटे थे- नवीन तिवारी। 5 भाई 3 बहिनों में एन.सी.तिवारी बेशक छोटे रहे हों लेकिन अवसरों

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

नचिकेता ने मांगे यमराज से तीन वर

सूर्यकान्त बाली

क्या कोई पिता अपने पुत्र को मौत के मुँह समें धकेल सकता है? खासकर वह पिता जो वेदों का ज्ञाता हो, परमविद्वान हो औरयज्ञों में निष्णात हो? ऐसा ही हुआ जब वाजश्रवा ने अपने किशोर उम्र के पुत्र नचिकेता को खुद अपने मन से मृत्यु के स्वामी यमराज के हवाले कर दिया। नचिकेता के पिता का नाम उद्दालक था या वाजश्रवा, इस समस्या से हम आखिरी पैराग्राफ में उलझेंगे। पर नचिकेता नामक जागरूक मन वाले किशोर उम्र बालक से हमारा पहला परिचय उस यज्ञ में होता है जो उसके पिता वाजश्रवा कर रहे थे। यह यज्ञ था सर्वमेघ या विश्वजित। यानी अपना सर्वस्व दान कर वाजश्रवा उस सर्वमेघ यज्ञ के जरिए सारी दुनिया को जीतने की इच्छा रखते थे। सारी दुनिया तो खैर वे क्या जीत पाते, मतलब यह कि वे सर्वस्व दान कर, स्वयं को अकिंचन बनाकर अपने ऊपर ही विजय प्राप्त करते और जिसने खुद को जीत लिया, उसने सारी दुनिया जीत ली।

पर वाजश्रवा खुद को कहाँ जीत पा रहे थे। वे तो परम अहंकार में थे। उनके परम अहंकार का पहला नमूना तो तभी मिल गया जब उन्होंने ऐसी-ऐसी गउएँ दान में देनी शुरू कर दी जो बुढ़ा चुकी थीं, जिनमें न बछड़े पैदा करने की शक्ति बची थी और न ही दूध देने की। वे ऐसी गउएँ दान देकर पुण्यों का संचय कर उनके बूते वे स्वयं पर विजय पाना चाह रहे थे। पर अहंकार कभी अपने को जीतने का बल दे पाया? अहंकार तो इन्द्रियों पर विजय नहीं दे सकता। वह क्रोध जरूर पैदा कर सकता है और इस अहंकारजन्य क्रोध का नमून, यानी वाजश्रवा के अहंकार का दूसरा नमूना तब मिला जब किशोर उम्र के नचिकेता ने अपने विद्वान पिता को अच्छी राह दिखाने की कोशिश की।

नचिकेता को लगा कि उसके पिता जिन गउओं को दान में दे रहे हैं, वैसा करके वे ठीक नहीं कर रहे। उसने तय किया कि वह सर्वस्व दान करने वाले पिता के हाथों खुद को दान करवा कर उनके यज्ञ को सफल बना देगा। उसने पिता से कहा कि जो गउएँ आप दान में दे रहे हैं वे इतनी बूढ़ी और अशक्त हो चुकी हैं कि इनमें खुद पानी पीने की और चारा खाने की ताकत भी नहीं रही, क्यों नहीं आप मुझे भी दान कर देते? पिता ने सुनी अनसुनी कर दी। पर नचिकेता शायद तय कर चुका था उसने अपनी बात दोहराई। पिता फिर भी चुप रहे। फिर जब नचिकेता नहीं माने और तीसरी बार वही बात कही तो पिता को गुस्सा आ गया। गुस्सा भी ऐसा आया कि वे उबल पड़े और बोल उठे कि 'जा, मैं तुझे मौत के हवाले करता हूँ।' स होमचरं पितँ यं तत् कस्मै मां दास्यसीति। द्वितीयं तृतीयं तं होवाच मृत्यवे त्वा ददमिति। (कठोपनिषद 1.14)

नचिकेता हैरान। ऐसा क्या हुआ कि पिता ने उसे मौत के हवाले कर दिया? उसे यमराज को ही दान में दे दिया? उसने पिता को समझाने की कोशिश की। बताया कि वह उनका ऐरा-गैरा पुत्र नहीं है और विद्या पढ़ने वालों में वह कहीं प्रथम है तो कहीं मध्यम। यानीवह कोई घटिया किस्म का छात्र भी नहीं है। तो अभी यमराज को उससे (अर्थात नचिकेता से) क्या काम पड़ गया कि पिता ने सीधा उसे मौत के हवाले कर दिया? पर क्रोधी पिता कुछ भी सुनने को तैयार नहीं। फिर से समझाया नचिकेता ने कि मनुष्य जीवन में रखा ही क्या है। वह तो बस अन्न की तरह है, मौसम आने पर पक जाता है मौसम बीत जाने पर नष्ट हो जाता है। हे पिता, आप अपने पूर्वजों के महान कार्यों को याद करो और वैसा श्रेष्ठ आचरण करो। क्यों मुझे यम के दरवाजे भेज रहे हो?

पर वाजश्रवा ने मानो अहंकार और क्रोध में अपने कान बन्द कर रखे थे। नचिकेता विद्वान थे और सम्वेदनशील भी। देखा कि पिता की बुद्धि पर पत्थर पड़ गए हैं और खुद को दान में दिए जाने की बात उसने खुदी ही कही थी। तो उठाया अपना कमण्डल और चल पड़े यमराज के लोक। अर्थात वे मर गए। अब एक अचम्भा खड़ा हो गया। नचिकेता तो यम को दान में दिए जाने को प्रस्तुत हो गए उनके महल के दरवाजे पर, पर दान स्वीकार करने को खुद यमराज ही महल से नदारद। कठोपनिषद में लिखा है। पर अर्थ क्या है उसका? क्या यह कि एक क्रोधी पिता ने अपने एक विद्वान और सम्वेदनशील बेटे को मौत के मुंह धकेल तो दिया, पर मृत्यु को नचिकेता स्वीकार नहीं? एक बालक की अकाल मृत्यु यमराज को स्वीकार नहीं? क्रोध में दिए गए अनुचित दण्ड को अपनी स्वीकृति की मुहर लगाने को यम तैयार नहीं?

पर नचिकेता को पिता का आदेश पूरा करना था। वे यमराज के महल के दरवाजे पर ही धूनी रमा कर बैठ गए। एक दिन, दो दिन, तीन दिन। जब यमराज तीन दिन बाद लौटे तो देखा कि एक विद्वान बालक (या किशोर) उनके महल के दरवाजे पर बैठा है और बैठा भी कैसा है? भूखा। प्यासा। यमराज का दिल

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

लोकपर्वों का हवाई उत्सव

उत्तराखण्ड का लोकपर्व फूलदेई को लेकर देश के प्रमुख उद्योगपति महेन्द्रा ग्रुप के चैयरमैन आनन्द महेन्द्रा बहुत प्रभावित हैं। सोशल साइट एक्स पर वह लिखते हैं- 'उन्होनें फूलदेई के त्यौहार के बारे में नहीं सुना था। वह बसन्त का त्याहौर है।'

बहुत अच्छी बात है कि सोशल मीडिया से हमारे लोक और लोकपर्वों का बखान हो जाता है और सजावट के साथ इनकी प्रस्तुति से कुछ लोग प्रभावित भी हो जाते हैं लेकिन हमारे उत्सव क्या सचमुच उत्साह के साथ मनाए जा रहे हैं या हवाई हैं। समाज में जिस प्रकार की दुर्गन्ध सोशल मीडिया ने फैला रखी है उससे तो यही लग रहा है कि लोकपर्वों का हवाई उत्सव होने लगा है। इस दुर्गन्ध को फैलाने वाले अपनी दाल-रोटी के अलावा समाज को भ्रमित भी कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि बार-बार अपने फोटो प्रदर्शन से ऊंचाई मिल चुकी है और देखने वालों की संख्या बढ़ने से उनका स्तर पहाड़ बन चुका है। इन हवाई किलों में समाज को किस कदर पीछे धकेला जा रहा है यह सोचनीय है।

फूलदेई ही नहीं हमारे तमाम लोकपर्व और मेलों की जो ठसक हुआ करती है उसको आधार देने के बजाय उसे रील बनाकर अपना प्रचार करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। हर कोई अपने को शायर, फनकार, चित्रकार, कथाकार, कलाकार यानी सबकुछ दिखाना चाहता है। यह सच्चाई है कि शादी चाहे किसी की हो रही हो अपने मोबाइल से अपनी फोटो खींचने वाले ज्यादा हैं। जनमबार के अवसर पर अपने चित्र को चस्पा करना, घर की देहरी को पूजते हुए उसका चित्र, यानी की हर जगह फोटो-रील यह सब मानसिक उपज ही तो है। इस उपज में उन सयानों की परवाह किसी को नहीं रहती तो चुपचाप दरी उठाते हैं, झाडू लगाते हैं, पूजा-पाठ की तैयारी करते हैं, आयोजन कैसे सकुशल सम्पन्न हो उसकी चिन्ता करते हैं। इन सच्चाईयों को जानना होगा। हवाई उत्सव एक समय बाद ढल जाते हैं और रहता सिर्फ ठोस कर्म है।

फसक

दाज्यू, उत्सव के दौर में कीट-पतंगे नाचने वाले ठैरे

नियुक्ति पत्र के लिये भी बहादुर साहब का दरबार लगता है बल

दाज्यू, शहरी विकास विभाग के तहत चयनित 63 सफाई निरीक्षकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किये गये। सीएम सैप ने मुख्य सेवक सदन में नियुक्ति पत्र वितरण किया। दाज्यू, उत्सव का दौर है जिसकी जो मर्जी मौज ही मौज ठैरी। उत्सव के दौर में कीठ पतंगे नाचने वाले ठैरे। देखा नहीं नोरा का डांस, पूरा देश हिलाने की योजना बना रहे हैं ये मखलन्दर। लट्ठ लेकर जब लोग उतरे तो नोरा का नाच-गाना रुका। इससे पहले राजस्थान में भी जाकर भी अंट-संट शूटिंग-गाना हुआ फिर रोक लगी। दाज्यू, पुराने समय के राजा-महाराजाओं का दरबार थोड़ा ही लगता है जब कलावन्तों को पुरस्कार मिलता था और जागीरें मिलती थीं। अब तो किसे के किये-धरे का पुरस्कार कोई देता और कोई लेता है। नियुक्ति पत्र के लिये भी बहादुर साहब का दरबार लगता है बल। जमाना मगनमौज का चल रहा है, चलने भी दो।

दाज्यू, शक्तिफार्म में अवैध खनन की बेखौफ कहानी बहुत लम्बी होने के बाद पुलिस चौकी ही लाइन हाजिर हो चुकी है। रुद्रपुर में नकली किताबें बेचने वाले गिरोह पर शिकंजा कस दिया है बल। दाज्यू, भूत-मसान सब नाच रहे हैं। मुनस्यारी में पेट्रोल पम्प स्वामी को कम्पनी का 45 लाख चुकता न करने पर नोटिस जारी हुआ है बल। हम सोच रहे थे कि पश्चिम एशिया में चल रही बमबारी के कारण मुनस्यारी में तेल समाप्त हो गया है। विजिलेंस टीम ने देहरादून में ऊर्जा विभाग के अवर अभियन्ता को 80 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा तो हमें बालकराम की याद आ गई। दाज्यू, बालकराम अपने समय में बिजली विभाग का खासमखास था। दिनभर हीटर जलाकर गिटार बजाता और दूसरों को भी ऊर्जा के लाभ बताया करता था।

उत्सव के दौर में और ही और देखने को मिल रहा है। हल्द्वानी गौलापार के स्टेडियम में मैच समाप्त होने के बाद वहाँ तैनात बाउंसरों ने अपनी पेमेंट को लेकर हंगामा कर दिया था। दाज्यू, चैत्र नवरात्र में भी हुल्लड़बाजी कम नहीं थी। खटीमा पीलीभीत निवासी देव शर्मा के खिलाफ नाबालिक को भगा ले जाने का मुकदमा दर्ज हुआ। किच्छा क्षेत्र में तीन वर्षीय मासूम के साथ दुष्कर्म का प्रयास करने वाले दादा को बीस साल की कठोर कारावास और पचास हजार रुपये अर्थदण्ड की सजा सुनाई गई। दाज्यू, कलजुग का अंट-संट भगवान ही थाम सकता है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

नजारे बदले लेकिन...

प्रथम पृष्ठ का शेष

पर आगे बढ़ते हुए इन्होंने अपने रास्ते तय किये और सन् 1971 में इनका विवाह निर्मल जी के साथ हुआ। इनके परिवार में दो बेटियां प्रीति, संगीता (गुड़िया) और पुत्र विजय हुए। सभी गृहस्थ आश्रम के साथ अपनी परम्पराओं से जुड़े हैं, जो उन्होंने श्रीमती निर्मल-श्री एन.सी.तिवारी से पाया।

अल्मोड़ा से बीएससी करने के बाद तिवारी जी इलाहाबाद पढ़ने गये लेकिन स्कूल-कालेज की शिक्षा से ज्यादा व्यवहारिक शिक्षा में रमने वाले एन. सी. तिवारी के भाग्य में कुछ और ही था। अल्मोड़ा में पढ़ाई के दौरान उनके साथियों में दुर्गासिंह मर्तोलिया भी थे। यह विज्ञान वर्ग में थे जबकि मर्तोलिया कला वर्ग में। वह बताते हैं- 'हमारे ग्राम शैल के प्रतिष्ठि व्यापारी नारायण तिवारी जी ने अल्मोड़ा के जिस जगह पर देवालय बनाया, उस स्थान को नारायण तिवारी देवाल बाजार कहने लगे और धीरे-धीरे एनटीडी नाम प्रचलित हो गया। इसी क्षेत्र में सीमान्त क्षेत्र के व्यापारी आते थे और यही जोहारी भाईयों का मुख्य केन्द्र था। ज्यादातर डॉ.दरवान सिंह के आवास पर भी रहते थे। बाद में और ज्यादा विस्तार हुआ। सन् 1947 में रिफ्यूजी भी इस क्षेत्र में आकर बसने लगे थे। इनके स्कूल के साथी गिरीश तिवारी 'गिर्दा', बीरशिवा स्कूल के संस्थापक एन.एन.डी.भट्ट, सत्यवान सिंह जंगपांगी, पुष्कर सिंह जंगपांगी, दरवान सिंह, उत्तम सिंह वहीं मिले थे। उस दौर में पढ़ाई के बाद ज्यादातर शिक्षक बने और फिर उच्चपदों पर आसीन रहे। हल्द्वानी दोनहरिया निवासी लक्ष्मण निवास का नाम हमेशा से अग्रणीय रहा है इस परिवार के बाला सिंह, सत्यवान सिंह जंगपांगी, सेल्सटैक्स कमिश्नर पुष्कर सिंह, जज उत्तम सिंह पांगती, दुर्गा सिंह अच्छे साथी रहे हैं।'

इण्टर के बाद इलाहाबाद पढ़ाई गये तिवारी जी अधूरी पढ़ाई से जब लौटे तो कुछ महीने कौसानी में अध्यापकी करने लगे। इसके बाद बिड़ला मिल सिरपुर कागजनगर, आन्ध्रप्रदेश में अपने बड़े भाई के पास चले गये जो बिरला कागज फैक्ट्री में थे। 1938 में स्थापित भारत की सबसे पुरानी यह पेपर मिल्स को हैदराबाद मिर उस्मान अली खान द्वारा स्थापित किया गया था। 1950 में बिरला परिवार ने इसका अधिग्रहण किया और 2018 में जे.के. पेपर लि. ने इस मिल का अधि ग्रहण कर लिया। बिरला की इस फैक्ट्री में एन.सी.तिवारी क्वालिटी कन्ट्रोल का काम देखने लगे, कुछ समय बाद पेपर मैकर बन गये। सन् 1968 में मशीन में दुर्घटना होने के बाद इन्होंने विचार बदला और अपने गाँव से इतनी दूर आ चुका हूँ, भाई भी यहीं है, क्यों न घर चल जाऊँ। फिर से शैल ग्राम अल्मोड़ा आ गये। कुछ दिन रुकने के बाद हल्द्वानी का रुख किया। अल्मोड़ा में जहाँ इनकी मुलाकात दुर्गा सिंह मर्तोलिया से हुई थीं वहीं हल्द्वानी में आनन्द बल्लभ उप्रेती से हुई। तब तक 'पिघलता हिमालय' अखबार के बारे में चिन्तन नहीं हुआ था। हल्द्वानी में स्वरोजगार के क्रम में यह अपने को आजमाते रहे और सफल नहीं हो रहे थे। खुली चाय का कार्य भी किया लेकिन इसका प्रचलन न होने से उसे छोड़ पेपर एजेंसी ले ली। अनुभव तो था लेकिन दूर-दूर तक उधारबाजी से इस काम को भी बन्द कर दिया। उन दिनों में आनन्द बल्लभ उप्रेती का छापाखाना 'शक्ति प्रेस' खुला और वह पत्रकारिता में पहले से सक्रिय थे ही। तिवारी जी बताते हैं कि युवाओं और गपोड़ियों के बैठने का अड्डा कालाढूंगी रोड स्थित 'शक्ति प्रेस' हुआ करता था। दाँतों के डाक्टर बी.सी. पन्त, वकील जीवन जोशी, सत्यवान सिंह जंगपांगी, पुष्कर सिंह जंगपांगी, लक्ष्मण सिंह डसीला तमाम लोगों का मिलना जुलना बराबर था। कुछ अन्तराल में दुर्गासिंह मर्तोलिया भी 'शक्ति प्रेस' में आए और उप्रेती जी के साथ एक प्रण सा हो गया कि अपना अखबार निकालना है। 1978 में 'पिघलता हिमालय' की शुरुआत हो गई। जीवन के बहुत उतार-चढ़ाव सभी साथियों ने देखे और एक-दूसरे की परेशानियों को समझा-महसूस किया।

तिवारी जी बताते हैं कि स्वरोजगार के क्रम में उन्होंने पहली बार सोपस्टोन इन्डस्ट्रीज की स्थापना कर डाली। छोटी मुखानी हल्द्वानी में 1973 में इसे स्थापित किया गया। बागेश्वर में खड़िया कार्य के शुरुआती दिन थे। बहुत मुश्किलों से तब खड़िया कारोबार का बाजार बना था, एक प्रकार से इसका परिचय ही हुआ। कुछ सालों तक सफल कार्य करने के बाद तिवारी ने इस कारोबार को समेट दिया। आज भी छोटी मुखानी का वह क्षेत्र खड़िया फैक्ट्री नाम से ही जाना जाता है। अपने कारोबार और घर-परिवार के साथ कदम से कदम आगे बढ़ रहे तिवारी जी ने अपने साथियों और समाज की भलाई के लिये भी कदमताल कम नहीं की। होली हो या दीपावली उसकी रंगत बनी रहे इसके लिये इनका ध्यान पूरा था। वह बताते हैं कि हल्द्वानी में छोटा सा बाजार और दूर-दूर तक छिटके आवास थे। साइकिल से आना-जाना होता था और होली मिलने के लिये एक दूसरे के वहाँ अनिवार्य रूप से जाते थे, एक बार जेलरोड में पत्थरबाजी की घटना ने माहौल खराब किया था। पहाड़ की होली के लिये हीराबल्लभ पन्त जी के वहाँ सभी जुटते थे। रामपुर रोड में बालमुकुन्द तिवारी के घर में बैठकी होली के अलावा जगदम्बा नगर में इनके अपने आवास पर होली की बैठक जमती थी। रेंजर हीरा बल्लभ जी, रमेश चन्द्र, अल्मोड़ा से तारा प्रसाद 'तारी मास्साब', जगदीश उप्रेती 'जग्गन' से रातभर रागों में भरी होलियां सुनने को मिलती थीं।

सामाजिक सरोकारों से जुड़े एन.सी. तिवारी जी जनमुद्दों को लेकर हमेशा अगुवाई करते रहे हैं। जमरानी बांध बनाने के आन्दोलन के क्रम में श्री नवीन चन्द्र वर्मा के साथ मिलकर इन्होंने पीआईएल तक डाली जिसमें विभाग को जुर्माना पड़ा था। व्यापारी हितों के लिये भी इनकी भागीदारी कम नहीं रही। वह बताते हैं कि सन् 1992 में अलीगढ़ में व्यापार मण्डल का सम्मेलन हुआ, तब बाबूलाल जी को कुमाऊँ का प्रभारी बनाया गया और उन्हें कोषाध्यक्ष। पृथक पर्वतीय राज्य के बाद सन् 2001 में उ.प्र. से अलग होकर उत्तराखण्ड का व्यापार मण्डल बना। इसके लिये गाजियाबाद में यूपी के अध्यक्ष श्याम विहारी(एमपी) सहित तमाम साथी थे। उत्तराखण्ड व्यापार मण्डल के लिये ऋषिकेश के यशपाल अग्रवाल अध्यक्ष, हल्द्वानी से बाबूलाल गुप्ता कार्यकारी अध्यक्ष, देहरादून से अनिल गोयल महामंत्री, नवीन वर्मा उप महामंत्री, एनसी तिवारी कोषाध्यक्ष बने।

राज्य आन्दोलन के दौरान अगुवाई करने वाले एन.सी.तिवारी कहते हैं- मुलायम सिंह का जमाना था और पुलिस का सख्त पहरा। आरक्षण विरोधी आन्दोलन में सुलग रहे युवाओं को जेल भेजा जा रहा था तब हल्द्वानी में छात्र अभिभावक संघर्ष समिति का गठन हुआ जिसमें वह संयोजक बने। इस बीच अज्ञात उत्तराखण्ड मुक्ति मोर्चा द्वारा इन्हें जान से मारने की धमकी तक दे दी गई। मानसिक तनाव व अन्य प्रकार से दबाव देने वाले तिवारी जी के पीछे लगे रहे लेकिन ये विचलित नहीं हुए बल्कि और सूझबूझ से कमान संभाली। राज्य आन्दोलन का स्वरूप बढ़ता गया और सारे सरकारी संगठन इस समिति से जुड़ गये। जब दिल्ली में प्रदर्शन की बात हुई तो शासन-प्रशासन का पहरा था। जाने की अनुमति नहीं थी, ऐसे में कोर्ट से चालीस बसों को ले जाने की अनुमति ले ली गई। वह कहते हैं कि पुलिस का इरादा था आन्दोलनकारियों को हल्द्वानी से आगे ही न बढ़ने दिया जाए। गढ़वाल में भी ऐसा ही हुआ और दिल्ली जा रहे आन्दोलनकारियों के साथ रामपुर तिराहा काण्ड हुआ था। हल्द्वानी मे भी रामपुर तिराहा काण्ड कराने की पूरी साजिश थी लेकिन किसी प्रकार पूरे आन्दोलन को सही दिशा दी गई और आन्दोनकारी युवाओं को बचाया गया।

बातचीज में तिवारी जी पुराने दिनों को याद कर भावुक हो जाते हैं और कहते हैं- जितना किया बहुत था, अब नई पीढ़ी ने इस शहर और प्रदेश को संवारने में जुटना चाहिए। पिघलता हिमालय परिवार में संरक्षक की भूमिका रखने वाले श्री तिवारी के सुपुत्र विजय तिवारी भी सुलझे हुए युवा उद्यमी हैं और उन पुरानी परम्पराओं को अपने बचपन से समझते हुए आगे बढ़ रहे हैं। कामना है उनकी चाह सफल रहे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जोहारी भाषा

च्यौलथे फाम- बौबूक अठिङ काऽम

जगदीश सिंह बृजवाल

आबन मातरि-बौबूक कू सबूत च्याल याद-फाम नी को ? नानतिन पैलि-पुलि, हात-खुट लगै, परै-लिखै, नानतिनक लिजै आखिर की नी कै आम-बाबनल। के ल्हे करा उनर तरौ-तारनत क्वेले न के सकन।

बबाक (पिता) हॉक-डॉक, अमाक (माता) लार-प्यिार-दुलार 'म्यर च्याला, तेर अलै-बला बा' (अर्थात तू खुश रहो बेटा, तेरा सारा दुःख मेरे ऊपर आ जाए) उनील जी ले के - बऽन-बोठ, ढुङ-लकौर, ऊन-चान, खेतिबेरि, ग्वर-बाछ आबन द्वी गास खान्क जुगुत के, बैकि सबै कुछ ओदरनक लिहैलि के।

आम-बबाक फाम च्याल-च्यलिने थे असल रे-रे बेर औने छ्। जूले उनर दुख तकलीप कष्टकंयूं, पुरौन दिख्यूं-सुनियूं फसक छ, उथे फाम कनू तो कुतमुताट मऽनन कस हंछ। छिला.... के।

पैलि जमनाक फसक कनू जबत गों-घरक मैसनक समाजक जीवन रन-बसन, खान्-पिन, काम-धान्, सबे येकठानी ..... वे 'संगक' चौंल सबनले खान् भे, अमरूक, हरकूक सिल्यूं उबीन सबनल लगायूं भे। यक्के कदारे कला ऐकआद गौंक सेठन बासमती चौंल कबे-कबे दे खांछी, तब उनर घऽरक चूलक तरोप बी बास असल सुंनी जांछी लो धे।' नानतिनों तिमीलत वस ढबक नी केना।

आजक जमानाक चाल-चलन, बिकासक रथ चलि रे, पैलिक मैस सिद-सौद, आबन जुबानक पक्कू, जू केदिहलत- 'राम लेख भे रजा।' समजि गेला तिमि। आबन घर-समाजमा ढले हीटन-बसन मैसन कंछी। जमान बदलि, मैसनक डिमाग ले बदलिगे, कसन- कस हेगे (परि-लेखिबेर सबनक ठाठ-बाट दिखीने रे। बस, 'यक्के फाम उ जमनाक च्योल-बोबूक 'काथ-कहानि' फाम तमर सामनि ने ऐरे।'

च्योल जू नौनू -नौन जोक उमर बार-तेर बरसक हने,ब्वोब, चालीस -बयालीस सालक ज्वाने हने.ख्वरान वतौर जिमेदारी, नानतिनक पुरे गोठ बौब बिच्यौर कीझे कंछ. राते-दिन काट-काट, मार-मार, फिरि ले कला पुर नी हंछी। हे रौम! स्यूप-स्यूब- 'बौबूलत.... राते -ब्याले मोरीन भे।'

पैलि जमनाक गौंक मैसनक रन-बसन छ्नौक या पाथरक कुर हंछी। बैकि मैसत गरीब छी, सैठ ज्यू कला औंङल मा भे। पाथरक कुराक बबाल (परेशानियां) कम भे, छ्औनक कुरत बस-बसेक छ्वैन भे। जोक इनतजाम कने परंछ्।

सालिम घास काटनक सीजन की ऐ, अदरात बी बाटबन हकरौलि -कुकरोलि, उठा-उठा, हीटा-हीटा स्यैनिनक छ्युयोरियो, भलमैसो टार 'रूपसीबगर' जानछ् हीटा लोदबी, सबनल कुर छ्वैनाक इंतजाम कन भे।

अमाल के- 'हाला भलमैसो हामर की छ् राम। ज्वल आबन इनतजाम नहीं के सकिने, उनर परिस्थिति ऐ गुजरियूं जरूर हौले।

बबाल (पिता) के- 'के कने परूल, चौ- चितै बऽन बोठ बी सालिमक सुदयाल कौंल।

आम- 'जी कंछा पे, आब लौदबी केबर इनतजाम भल भे, पहा सालिमले टुटन बसन, चौमास 'झीनियाक उडियार' भीतर बने रन परूल।

बबाल (पिता) के- 'के-न -के सो-सुदियाल कन परूल। आब सलमियानत भेल-भंङार रयूं हौल।'

आम- 'जस कंछा पे।'

येक दिन खानी खै-ख्वी 'च्यौल-बौब्' बनक बांट लैगि, 'बबालत' पैलि बी सौचियूं हने कि गांर पारि 'भ्याराबगरक' भेल जानछ्, द्वीये धनी जाने रे।

पुल पैरि जेबर जू द्वी कुर एक वरीतरोप, दोहरा मनी परि-परि उनर तलि गराने-गरान भेल क्वानमा पुजि, ठूल बांजक रूख, बबाल के आब ते यहै बस च्याला, मैं तलि भेलबन बी सालिम काटि-कुटि ल्हौछ्,भारि बनोलत पे घऽर जौंला हा,

च्यौलोल- 'होय, केबर ख्वार हलकै'

च्यौलथे, 'के कोऽन नी ऐ। तब बाब तलि भेलनबी वलमीने जानियू भे, डऽरल च्यौलौक दे हातखुट लगलगाट कामन्यू भे कंछा।

बाब सालिमक नना-नान ओंठ बनेबर मलिके ल्कोनी छी। होते करते वलार अदिखौल हेगे, कुछ देर तक सोचि अब औऽल पर वलारे डीठ के जबत तोल नानू बगर मां बाब थे उबियूं दिखिनी। चौ. ......रे।

फिर थ्वार देर बाद उकाल तरोफ ऐग्यूने। फिरि ऐजि अदिख्योल, भोत देर हेग, क्ये कोऽन नी ऐ...धदाऽऽऽ...धद. ऐऽऽऽ...बाब .....बबा के!

'ना हो-ना कुटुक' आंखान आंसूल रूवे ऐगे, 'बंऐ श्बाब' थे के नी भे केबर डऽर थे लैग्यूं छी.. मऽनन अनकसे हन्यू हनि..

'बबात, भ्वात्त के मलिमा दिखौं हेग, मऽनन मनी धो सधार भे कंछा, बाब, सैद तलि भेलन बी बीचक भेलबन सालिमे सारन्यूने। सब सालिम बांजक रूखते पुन्येल। च्याला, आब तेकि लकराक भेरि बनौछ्।

वरिबन-परिबन ठून-मुन चौ-च्वी लकराक भेरि बनेबेर द्वीये झनल आबन-आबन पीठ में भेरि बोगिबेर घर आने रे।

घऽर पुंजियू की छी,अमालत के - 'आब ज्या-सातू खासिया, च्याला!'

च्याल- अमा! 'इदि च्याट् ज्या-सातू कसके जे बनाए।'

आम- बा! 'वारिबीटी मेलत तमर सबे काऽम कन्यूं च्यायूं छी।'

च्याल- 'हाऽऽऽ.हां...' अहो,अमा वह छी फसक।'

''जोक, 'बाब-आम' आज स्वरग न्हैग. छिला...... आबन, मातरि- बाबूक फामत सफनथे औनेर भे, कां पाईन आब आम-बाब, जोक पास ले छ्, वत भागयवाने समजा। आबन, पितर, आम-बाबनक असीरबाद नानतिन थे।'' लागनें छ् 'यूं फसक गौंठ् पारिलिया' छिला...जां ले तमर हंस-परान छ्, हामर, यकसार स्यो-ढोक .....छ्।

लेखौर-ज.बृ.। जोहारी 'साहित्यिक' धरोहर ही अंतत: विरासत में रहेंगी।)

ज्योतिष की बातें- 274

2 अप्रैल 2026 को मंगल मित्रराशि मीन में प्रवेश करेगा, जहाँ पर शनि से युति भी होगी। इस समय मंगल बली रहेगा। मंगल मुख्य रूप से स्वास्थ्य, धैर्य, परिश्रम, साहस, नेतृत्व क्षमता, युद्ध एवं खेलकूद, शत्रु पर विजय, भूमि-भवन-वाहन का लाभ, मशीनरी, इंजीनियरिंग आदि का कारक होता है। मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका के अनुसार मंगल त्रिषडाय अर्थात् तीसरे, छठवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है तथा कर्क व सिंह राशियों के लिए योगकारक भी होता है। अतः अगले 40 दिन मंगल अपने कारक विषयों में मकर, तुला, वृषभ, कर्क व सिंह राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा तथा अन्य राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

हनुमान जयन्ती- चैत्र शुक्ल पूर्णिमा सूर्योदयकालीन तिथि में हनुमान जयन्ती का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार बृहस्पतिवार 2 अप्रैल 2026 को हनुमान जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा।

इस स्तम्भ में प्रस्तुत ग्रहों का गोचरफल स्थूल रूप से ही सही होता है। व्यक्तिविशेष के लिए उसका सूक्ष्म फलित उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 162

युद्ध का आधुनिक स्वरूप

दुनिया में जब भी कहीं कोई युद्ध होता है तो युद्धप्रेमी लोग विश्वयुद्ध की कल्पना में डूब जाते हैं। वे सोचते हैं कि विश्वयुद्ध शुरू हो गया है, अब यह दुनिया नष्ट हो जाएगी और मैं इस दुनिया को नष्ट होते हुए अपनी आंखों से देखूँगा लेकिन जब वही युद्ध धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है तो उनका दुनिया नष्ट होने का सपना चकनाचूर हो जाता है। फिर सनसनीखेज पत्रकारों और ज्योतिषियों के मुंह पर ताला पड़ जाता है।

पहले जब दो देशों के मध्य युद्ध होता था तो राजाओं के मध्य होता था अर्थात् राजाओं के सेनाओं के बीच में होता था। आम जनता को युद्ध से कोई भी किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होती थी। शतरंज के खेल में सेना को मारा जाता है, राजा को नहीं मारा जाता बल्कि बन्दी बनाया जाता है। आजकल युद्ध में सीधे शासक की ही हत्या की कोशिश जाती है। आजकल के युद्ध में सैनिकों की भागीदारी बहुत कम हो गयी है। आजकल युद्ध में एक दूसरे के स्कूलों, अस्पतालों, बड़े-बड़े आवासीय भवनों पर हमला करके निर्दोष आम नागरिकों को मारा जाता है जिनका युद्ध से कोई लेना-देना ही नहीं होता। लाखों की सेना में कुछ सौ, हजार ही वीरगति को प्राप्त हो पाते हैं, शेष लाखों सैनिकों को पूरे जीवन में एक गोली भी चलाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता है। मानवता, नैतिकता पूर्णतः समाप्त हो गई है बल्कि हिंसा, क्रूरता और राक्षसीपन हावी हो गया है।

ऐसी स्थिति में हमें निष्पक्ष ही रहना चाहिए और विदेशों पर अपनी निर्भरता समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

धरमघर महोत्सव की तैयारियां

बेरीनाग। आगामी 11, 12 और 13 अप्रैल को धरमघर में होने वाले महोत्सव को लेकर तैयारियां होने लगी हैं। महोत्सव समिति के चेतन धर्मशक्तू ने बताया कि भव्य कलश यात्रा के साथ, झांकी के साथ शुरू होने वाले इस आयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहित किया जाएगा। समिति के अध्यक्ष गोकुल सिंह पंचपाल व सचिव केदार सिंह महर ने बताया है कि इस दौरान खेलकूद प्रतियोगिताएं भी की जा रही हैं।

गुमदेश का चैतोल मेला, चमू देव रथयात्रा

लोहाघाट। गुमदेश के चौखाम बाबा मन्दिर में दस दिवसीय चैतोल मेले का परम्परागत आयोजन हुआ। विशेष आकर्षण चमू देव की भव्य रथयात्रा थी, जिसमें उन्होंने सभी भक्तों को आशीर्वाद दिया। मन्दिर समिति के अध्यक्ष खुशाल सिंह धौनी की अध्यक्षता में जिला पंचायत अध्यक्ष आनन्द सिंह अधिकारी ने मेले का शुभारम्भ किया। इससे पूर्व देवडांगरों ने पंचेश्वर में गंगा स्नान कर पूजा की। पुरोहित भास्कर पाण्डे, शंकर दत्त पाण्डे, खीमराज धौनी, नरसिंह धौनी शामिल थे

भारत-चीन व्यापार अब वाहनों से होगा

धारचूला। भारत-चीन व्यापार का स्वरूप इस बार से बदला दिखाई देगा। जिस व्यापार में घोड़े-खच्चरों की टाप सुनाई देती थी, अब सड़क बनने के बाद वाहनों से व्यापारी सामान लेकर आवत जावत करेंगे। भारतीय व्यापारी धारचूला से सीधे वाहनों के द्वारा अपना माल मात्र 5 घण्टे में मण्डी तक पहुंचा देंगे। तकलाकोट में भी व्यापारियों के लिये मण्डी का नया डियाजन भवन तैयार है। बताते चलें सन् 1962 के युद्ध के 30 साल बाद 1992 में यह व्यापार शुरु हुआ था। कोविड-19 में बन्द के बाद अब इसे शुरु होने की खुशी है।

बागेश्वर समेत आठ शहरों में बनेंगी भूकम्प वेधशाला

उत्तराखण्ड में भूकम्पीय निगरानी तन्त्र को मजबूत करने के लिये बागेश्वर सहित आठ शहरों में भूकम्प वेधशालाएं स्थापित करने की तैयारी है। इसके लिये भूमि चयन कर विस्तृत रिपोर्ट राष्ट्रीय भूकम्प विज्ञान केन्द्र को भेजी गई है। भूकम्प चेतावनी प्रणाली को सशक्त बनाने के लिए सेंसर की संख्या को 500 तक विस्तारित करने का लक्ष्य है। वर्तमान में 169 सेंसर संचालित है। भूकम्पीय दृष्टि से सम्वेदनशील इस प्रदेश में जोन चार व पांच के अन्तर्गत भूकम्प की आशंका बनी रहती है। रिक्टर पैमाने पर दो से चार परिमाण वाले भूकम्प से विभिन्न इलाकों में धरती अक्सर कांपती रहती है। इसे देखते हुए राज्य में भूकम्पीय गतिविधियों के सटीक आकलन को सूक्ष्म स्तरीय मानीटरिंग की जरूरत भी है। साथ ही कम तीव्रता वाले भूकम्पों की पहचान करने और भूकम्प चेतावनी प्रणाली को मजबूत बनाने की दिशा में यह सब जरूरी है।

जिन शहरों में वेधशालाएं बननी हैं उनमें- रुड़की, देवप्रयाग, अल्मोड़ा, रामनगर, बागेश्वर, अल्मोड़ा, केदारनाथ, चकराता में जिला प्रशासन के सहयोग से भूमि चयनित की गई है। सरकार ने यह भी तय किया है कि दस शहरों का भूकम्पीय सूक्ष्म क्षेत्रीयकरण और जोखिम मूल्यांकन कराया जाएगा।

गंगावली जिले की मांग फिर से मुखर, धरना दिया

गंगोलीहाट। पर्वतीय राज्य उत्तराखण्ड गठन के बाद से ही जिस गंगावली जिले की मांग उठ रही थी, उसने फिर जोर पकड़ा है। सबका विकास पार्टी ने तीन दशकों से चली आ रही मांग पूरी न होने पर धरना प्रदर्शन किया। गंगावली जिला बनाओ समिति के अध्यक्ष गणेश सिंह बोरा व सबका विकास पार्टी के अध्यक्ष नरेन्द्र चद्र शर्मा उर्फ उत्तराखण्डी ने कहा कि गंगोलीहाट ब्लाक की 117 और बेरीनाग ब्लाक की 84 ग्राम पंचायतों को मिलकर नए गंगावली जिले का गठन किया जाना चाहिए। कहा मुख्यालय दूर होने के कारण यह क्षेत्र विकास ककी मुख्यधारा से कटा है। धरने में मनोज माहरा, गोपाल सिंह धानिक, राजेश जोशी, दरपान सिंह, दीपक सिंह, जोगा सिंह, गोविन्द सिंह मौजूद थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

देहरादून में जोहार भवन हेतु कमर कस ली है

होली मिलन समारोह और जोहार भवन निर्माण हेतु घोषित धनराशि रूपए 1,11,000/- का चेक सौंपा

पि.हि.प्रतिनिधि

उत्तराखड की राजधानी देहरादून में अब जोहार भवन हेतु कमर कस ली गई है। इसके लिये आयोजन के दौरान जेएसवीएनएस के कार्यकारिणी द्वारा भवन निर्माण हेतु धनराशि का चैक सौंपा गया।

होली मिलन समारोह-26 के तहत जेएसएस देहरादून द्वारा थानों, फोरेस्ट रेस्ट हाउस में हुए आयोजन में लगभग 150 सदस्यों ने भाग लिया। यह मिलन समारोह केवल खाने पीने तक ही सीमित न होकर, हमें आपस में मिलकर बातचीत, फ़सक फराल, याद फाम, खेलकूद, गाना बजाना, चाचरी, होली गीत, रैप डांस, तंबोला, साथ ही साथ एक अद्भुत खेल भी कार्यक्रम का आकर्षण रहा, वह था कौन बनेगा करोड़पति के तर्ज पर कौन बनेगा हजारपति क्विज का संचालन ललित सिंह मर्तोलिया जी द्वारा ही प्रायोजित इस खेल को बड़े ही मनोरंजक ढंग से कराया गया, जिसका सभी ने आनन्द लिया। श्री मर्तोलिया ने कहा- मैं तो सभी सदस्यों से यही आग्रह एवं उम्मीद रखता हूं कि आने वाले सामूहिक आयोजनों में, समारोहों में अवश्य आएं और अपनों से मिलकर आनन्दित होवें। इसमें बच्चों एवं युवाओं की भागीदारी भी जरूरी एवं महत्वपूर्ण है। हम, उनको एक मंच दे सकते है और वे इसका लाभ उठा सकते हैं। यह एक विचारणीय भी है।

आयोजन के दौरान मुख्य रूप से परम्परागत खेल खेले गए। महिलाओं का चम्मच दौड़, जिसमें विजेता रहीं- प्रथम श्रीमती रेणु बृजवाल, द्वितीय श्रीमती पुष्पा बर्फाल, तृतीय श्रीमती विजया जंगपांगी। घुन्नीमार यानी मुर्गा झपट वरिष्ठ जन, आयु वर्ग 60 से ऊपर में प्रथम ललित सिंह मर्तोलिया (69+), द्वितीय महेश सिंह धर्मशक्तू (64+), तृतीय रू श्री भवान सिंह रावत (65+)। घुन्नीमार यानी मुर्गा झपट पुरुष आयुवर्ग 60 तक के प्रथम डॉ. हितेन सिंह जंगपांगी, द्वितीय कैप्टन भूपेन्द्र सिंह पांगती, तृतीय अरविन्द सिंह पांगती।

इसी क्रम में, एक महत्वपूर्ण चीज यह हुई कि जेएसवीएनएस के कार्यकारिणी द्वारा जोहार भवन निर्माण हेतु घोषित धनराशि रूपए 1,11,000/मात्र (एक लाख ग्यारह हजार रूपए) का चैक संरक्षकों की उपस्थिति के साथ साथ गणेश सिंह मर्तोलिया, अध्यक्ष जेएसवीएनएस, सचिव ललित सिंह मर्तोलिया जेएसवीएनएस की उपस्थिति में सुरेंद्र सिंह पांगती जी संरक्षक द्वारा जेएसएस अध्यक्ष नवराज सिंह पांगती व कोषाध्यक्ष जितेंद्र सिंह बृजवाल को सभी सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति में प्रदान किया गया। यह एक स्मरणीय व यादगार क्षण रहा। इससे भवन निर्माण समिति को बल मिला और अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

जोहार भवन निर्माण समिति के संयोजक ललित सिंह मर्तोलिया ने अपेक्षा की कि इसी तरह हमारे समाज के अन्य समितियां, संस्थाएं और संगठन भी धनबल देकर हमारा मनोबल बढ़ा सकते है। परिणाम स्वरूप, समाज हित में हम आपको जोहार भवन देंगे। इसके लिए हमारी देहरादून की समितियां अपना तन मन धन दे रही है। इससे बढ़कर अपना अमूल्य समय दे रहे है। अन्त में सभी को होली मिलन समारोह की सफलता के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

अपना भवन होता तो उसमें आयोजन होता : नवराज

समारोह के अवसर पर जोहार सांस्कृतिक समिति देहरादून के अध्यक्ष नवराज सिंह पांगती ने शीघ्र जोहार भवन की आवश्यकता पर कहा कि अगर अपना भवन होता तो यह समारोह उसमें होता न कि वन विश्राम गृह, थानों में। इसी क्रम में उन्होंने सभी से अपील की कि सदस्यगण आगे आएं और अपना अशंदान देकर जोहार भवन निर्माण में सहयोग करें। जिन सदस्यों का जोहार सहयोग निधि अल्मोड़ा में खाता है, उनमें 33 सदस्यों ने अपनी ब्याज राशि को जोहार भवन निर्माण में स्थानान्तरित करने पर सहमति प्रदान किया और आवेदन हल्द्वानीभेज दिया गया है। बाकी सभी सदस्यों से भी पुनः अनुरोध किया गया।

समारोह के दौरान डॉ. गोविन्द सिंह जंगपांगी ने अपने पुत्र के विवाह अवसर पर 10100, नवराज सिंह धर्मशक्तू ने बूबू बनने की खुशी में 10100, डॉ. भागीरथी जंगपांगी ने आचे बनने पर 10100/- का अंशदान जेएसएस देहरादून को दिया।

मुवानी में उप तहसील की मांग को लेकर मुखर

थल। रामगंगा घाटी के मुवानी में उप तहसील की खोलने की मांग को लेकर क्षेत्रवासी एक बार फिर से मुखर हो चुके हैं। कनालीछीना विकासखण्ड के एक छोर पर बसे इस घाटी के लोग काफी समय से उपतहसील की मांग कर रहे हैं।

तीन विकासखण्डों के केन्द्र में यदि तहसील बनी तो इसका काफी लाभ होगा। मुवानी की देवलथल तहसील से दूरी 25 किमी है। इससे लगे डीडीहाट व बेरीनाग ब्लाक हैं। पुराने समय में व्यवसाय का केन्द्र रहा मुवानी पिछले कई सालों से उपेक्षा का शिकार रहा है। स्थानीय लोगों ने ध्यान आकर्षण कराने के लिये महोत्सव इत्यादि आयोजन भी कर डाले हैं लेकिन चुनाव के लिये सतर्क रहने वाले जनप्रतिनिधि मुख्य मुद्दे के लिये अपनी ओर से किसी प्रकार की पहल नहीं कर सके।

परिक्रमा

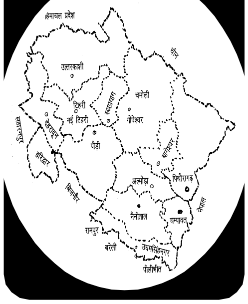

जून से पहले शुरू हो भवाली-रातीघाट बाइपास

नैनीताल। मुख्य सचिव आनन्द वर्द्धन ने नवनिर्मित भवाली बाइपास, भवाली-रातीघाट बाइपास, कैंचीधाम मन्दिर में निर्माणाधीन विभिन्न निर्माण कार्यों सहित नैनीताल में माल रोड पर भूधंसाव की रोकथाम के लिए कराए जा रहे सुरक्षात्मक कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। कैंची धाम में लगने वाले जाम की समस्या के स्थायी समाधान के लिए जिले की प्रमुख परियोजना में शामिल कैंचीधाम बाइपास (सेनेटोरियम-रातीघाट) सड़क मार्ग का सीएस से निरीक्षण करते हुए अधिकारियों को निर्माण कार्यों की जानकारी ली। सीएम ने लोनिवि के मुख्य अभियन्ता को निर्देश दिये कि भवाली-रातीघाट बाइपास के कार्य तेजी से करते हुए इस मार्ग में पर्यटन सीजन से पूर्व यातायात सुचारू किया जाए। जब कि मोटर पुल नहीं बन जाता, तब तक वैली ब्रिज बनाकर याताया सुचारू कराया जाए।

सड़क के लिये बरसे कनारवासी

मदकोट। सड़क की मांग को लेकर कनार वासी बरस चुके हैं। उन्होंने मुख्यालय जाकर धरना-प्रदर्शन किया है। आजादी के बाद से आज तक भी सड़क का इन्तजार कर रहे लोगों का यह भ्रम टूट चुका है कि उन्हें सड़क सुविधा आसानी से मिल जाएगी। बरम से कनार के लिए स्वीकृत 20 किमी लम्बी सड़क का निर्माण कार्य न होने से नाराज ग्रामीणों की चेतावनी पर आश्वासन मिला है कि 45 दिन के भीतर सर्वे होगा।

24 अप्रैल से घर-घर होगी जनगणना

हल्द्वानी। 6 साल के अन्तराल के बाद आंखिरकार जनगणना शुरू होने जा रही है। इसकी शुरूआत 24 अप्रैल से होगी। पिछली जनगणना 2011 में में प्रस्तावित कोविट-19 के कारण टलती रही। जनगणना को लेकर नगर निगम स्तर पर तैयारियां तेज कर दी गई हैं। इसके लिये फील्ड ट्रेनर्स का प्रशिक्षण भी हो चुका है। पहले चरण के बाद ये ट्रेनर्स प्रगणन और सुपरवाइजर को प्रशिक्षण देंगे। नगर निगम क्षेत्र में निगम और ग्रामीण क्षेत्रों में राजस्व विभाग की ओर से जनगणना का कार्य कराया जाएगा। इस बार जनगणना पूरी तरह डिजिटल माध्यम से होगी। 10 अप्रैल से 24 अर्पेल तक मोबाइल ऐप के द्वारा डेटा दर्ज किया जाएगा। 24 अप्रैल से घर-घर जाकर जन गणना की जाएगी। प्रगणक घर-घर जाकर स्मार्टफोन या टैबलेट के द्वारा रियल टाइम डेटा अपलोट करेंगे। ऐप ऑफलाइन भी काम करेगा, जिससे नेटवर्क न होने पर भी जानकारी सुरक्षित की जा सकेगी।

जनगणना में लगे कर्मचारी सीएम एमएस पोर्टल पर पहले से पंजीकृत होते हैं और केवल वे ही ऐप में लॉगिन कर सकते हैं। इसके अलावा स्व-गणना की सुविधा भी दी गई है। जिससे व्यक्ति वेब पोर्टल पर स्वयं जानकारी भरकर यूनिक आईडी ले सकेंगे। जिसे बाद में में प्रगणक के साथ शेयर किया जा सकता है।

तबालदों की प्रक्रिया शुरू हो चुकी

देहरादून। तबादला एक्ट के तहत प्रदेश में कर्मचारियों के तबादलों की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। 31 मार्च तक विभाग अध्यक्षों की ओर से मानक के अनुसार कार्यस्थलों का चिन्हीकरण किया जातना है लेकिन शिक्षकों और कर्मचारियों की संख्या के अनुमान में सबसे बड़े शिक्षा विभाग में शिक्षकों के इस साल अभी स्थानान्तरण नहीं हो पाएंगे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नचिकेता ने मांगे....

प्रथम पृष्ठ का शेष

एकदम पसीज गया सचमुच मजेदार कहानी है नचिकेता की। यमराज पसीज गए तो बोले कि जो तीन दिन तीन रात तुम मेरे महल के दरवाजे पर भूखे-प्यासे बैठे रहे हो, उसके बदले में तीन वर मांग लो- तस्मात् प्रति त्रोन् वरान् वृणीष्व (1.1.9)।

आप कल्पना कर सकते हैं कि नचिकेता ने कौन से तीन वर मांगे होंगे? नचिकेता बुद्धिमान था। यमराज वर दे रहा हो तो नचिकेता भला कैसे चूक सकता था? उसने तो सर्वस्व मांग लिया और फिर सभी कुछ छोड़ दिया। पहला वर मांगा कि मेरा मिलन जब मेरे पिता से हो तो मेरे साथ क्रोधरहित होकर बोलें। यानी अपना जीवन मांग लिया और पिता की प्रसन्नता भी मांग ली। जाहिर है कि मौत के साए में रहकर नचिकेता के लिए किसी एक भी वर से क्या फायदा होता? आर मरे जग परलया जान है तो जहान है। यमराज भी समझते थे। कहा दिया तथास्तु-वीतमन्युः त्वां दृषिवान मृत्युमुखत् प्रमुक्तम्। (1.1.11)

जीवन तो माँग लिया। अब नचिकेता को जहान चाहिए था। संसार का सम्पूर्ण ऐश्वर्य चाहिए था। समराज दाता हो तो कोई उन्हें सस्ते में क्यों छोड़ दे? और सांसारिक ऐश्वर्य का सर्वोच्च मानदण्ड स्वर्ग की समृद्धि और ऐश्वर्य अपने लिए मांग लिए। कहा, स्वर्गलोक में कोई भय नहीं, वहाँ का आदमी भूख और प्यास को भी लांघ जाता है, हर तरह के शोक का अभाव और समस्त आनन्द वहाँ होता है और हे यमराज, तुम वह विद्या जानते हो जिसे जान लेने पर फिर स्वर्ग का सौन्दर्य मनुष्य की हथेली पर होता है। वहीं मुझे बताओ। और फिर यमराज ने नचिकेता को उस यज्ञ विद्या का ज्ञान दिया जिसे पा लेने के बाद मनुष्य के पास ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं रहती। साथ में यह भीकह दिया कि स्वर्गिका समृद्धि के जिस ज्ञान को दूसरे वर में तुमने प्राप्त कर लिया है, लोग अब तुम्हारे ही नाम से उसे नचिकेता अग्नि (अग्नि यानी ज्ञान) कहेंगे, सो हे नचिकेता, अबतुम तीसरा वर मांगो-

एष तेग्नि नचिकेत: स्वर्ग्य:
यमवृणीया द्वितीयेन वरेण
एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनास:
तृतीयं वरं नचिकेत: वृणष्व
(कठोपनिषद 1.1.19)

अब और क्या मांगते नचिकेता। जीवन मांग लिया। पिता की प्रसन्ता के साथ स्वर्ग की समृद्धि मांग ली जहाँ न बुढ़ापा होता है और न मृत्यु। सब कुछतो मांग लिया था बस अब एक ही चीज और मांग सकते थे नचिकेता, और वर भी एक बचा था। अब नचिकेता इन सभी से, जीवन से, मृत्यु से, समृद्धि से मुक्ति ही मांग सकते थे, यानी जीवन जीवन से, उसके बन्धन से, मोक्ष ही मांग सकते थे, अर्थात आत्मा और ब्रह्म का ज्ञान ही मांग सकते थे। सो उन्होंने वही मांग लिया और यमराज को धर्मसंकट में डाल दिया। बोले, कुछ लोग कहते हैं कि मरने के बाद आत्मा रहता है, कुछ लोग कहते हैं नहीं रहता। सत्य क्या है, हे यमराज मुझे इसका ज्ञान दीजिए और यहीं मेरी तीसरी वरयाचना है।

यमराज ने बहुत कोशिश की कि नचिकेता इस वर को न मांगे, वापस ले ले। वे नहीं चाहते थे कि वाजश्रवा का यह जिद्दी बेटा आत्मा का ज्ञान पाने का अधिकारी है भी या नहीं। जिस तत्परता से नचिकेता ने जिन्दगी मांगी थी और स्वर्ग का समस्त ऐश्वर्य माँगा था, उसे देखते हुए तो वह संसारकामी व्यक्ति ही यम को नजर आया होगा। इसलिए कई तरह से यमराज ने उसे टालने की कोशिश की। कहा कि देवता भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं पा सके तो मैं तुम्हें क्या बता पाऊँगा। इसलिए, नचिकेता, इसके बदले कुछ और माँग लो। फिर यम ने नचिकेता को सांसारिक प्रलोभन देने शुरू किए कि कुछ भी माँग लो। सौ वर्ष की आयु, पुत्र-पौत्र, हर तरह का पशुधन, जमीन, महल, अक्षय, धन, सुन्दर स्त्रियाँ, रथ, सेवक और जो भी चाहिए वह सब माँग लेने का विकल्प यम ने नचिकेता को दिया। पर स्वर्ग के ऐश्वर्य को माँग लेने के बाद और बचता ही क्या था जो नचिकेता फिर से माँग ले। इसलिए उसने साफ नकार दिया और कहा कि ये नृत्य गीत और अश्व-हस्ती तुम्हें मुबारक (तवैव वाह: तव नृत्यगीते 1.1.26), मुझे तो बस वही वर चाहिए, जो मैंने माँगाहै (वस्तु मे वरणीय: स एव 1.1. 27), नचिकेता अब इससे अलग वन नहीं माँग सकता (नान्यं तस्मात् नचिकेता वृणेते 1.1.29)।

विवश यमराज ने नचिकेता को तीसरे वर के रूप में ब्रह्मज्ञान या आत्म ज्ञान प्रदान किया। वह आत्मज्ञान क्या है, बताने की जरूरत वैसे तो नहीं है। पर जितनी जरूरत है उसे थोड़ा नए सन्दर्भों के साथ हम अगले आलेख में बताएँगे। जब हम अष्टावक्र के बारे में लिखेंगे। क्या कोई यमराज के महल जा सकता है? उसके महल के बाहर तीन दिन तक भूखा-प्यासा बैठा रह सकता है? मन से किसी का सम्वाद हो सकता है क्या? ये ऐसे सवाल हैं कि जिनका तर्कपूर्ण उत्तर देना आसान नहीं। बल्कि दिया ही नहीं जा सकता। ऐसा तो हो नहीं सकता कि कठोपनिषदकार यह बात नहीं जानता होगा। जानता होगा तो क्यों उसने कहानी की शक्ल में एक गप लगा दी? बहस करेंगे, अगले आलेख में, अष्टावक्र के प्रसंग के साथ।

पर फिलहाल संक्षेप में जान लें कि नचिकेता थे कौन। कौन थे नचिकेता के पिता? उद्दालक या वाजश्रवा? जिस कठोपनिषद के कारण आज नचिकेता का नाम हम भारतवासियों को याद है, उसमें नचिकेता के पिता को वाजश्रवा भी कहा गया है और औद्दालक आरुणि भी कहा गया है। हम जान चुके हैं कि उद्दालक आरुणि श्वेतकेतु के पिता थे। उद्दालक के पुत्र हुए औद्दालकि यानी श्वेतकेतु। इस हिसाब से श्वेतकेतु ही वाजश्रवा हुए या फिर श्वेतकेतु और वाजश्रवा भाई-भाई हुए और इस तरह नचिकेता को उद्दालक आरुणि का पुत्र और श्वेतकेतु का भाई मानती है और इसी परम्परा के कारण हर व्याख्याकार ने यहाँ तक कि शंकराचार्य ने भी उद्दालकि को उद्दालक का पर्यायवाची बताया है,जो मानना आसान नहीं, जो भी मत मान लें, नचिकेता आरुणि के ही वंशज माने जाएँगे।

(साभार नवभारत टाइम्स)

बनभूलपुरा रेलवे भूमि प्रकरण पर आवास योजना फार्म वितरण याने अतिक्रमण हटेगा

हल्द्वानी। बनभूलपुरा रेलवे अतिक्रमण को लेकर लगातार चल रही आंखमिचौली के बीच जब प्रधानमंत्री आवास योजना के फार्मों का वितरण हो चुका है तो माना जा रहा है कि अब अतिक्रमण हटने में और आसानी होगी। बताते चलें कि बनभूलपुरा रेलवे अतिक्रमण क्षेत्र में प्रभावितों को प्रशासन ने घर-घर जाकर फार्म वितरण का कार्य किया। घर मिलने की खुशी पा रहे लोगों में उनका घर छिनने का दर्द भी है। फिलहाह सबकी नजर रेलवे भूमि के इस प्रकरण पर है कि आने वाले दिनों में हल्द्वानी के इस इलाके की दिशा-दशा कैसी होगी।

काशीपुर में चैती मेले की चहल-पहल

काशीपुर। मां बाल सुन्दरी देवी के दर्शन को श्रद्धालुओं के आने से काशीपुर में चहल-पहल बढ़ चुकी है। उत्तर भारत का प्रसिद्ध चैती मेले का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ हुआ। सांसद अजय भट्ट ने धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेते हुए मेले का उद्घाटन किया। मेला मजिस्ट्रेट अभय प्रताप सिंह सहित तमाम लोग इस अवसर पर थे। चैती मेले में दुकानों का टेण्डर विलम्ब से खुलने में थोड़ा अड़चन भी दिखाई दी। फिर भी मेले से जुड़े कारोबारी और इसके लिये उत्साहित लोगों की भीड़ जुटी हुई है। बाल सुन्दरी डोले के दौरान भारी भीड़ जुटी।

रानीखेत एक्सप्रेस का मार्ग बदला

हल्द्वानी। दिल्ली-शाहदरा के बीच नये पुल के निर्माण कार्य के चलते रेलवे ने रानीखेत एक्सप्रेस के संचालन में बदलाव किया है। इज्जतनगर मण्डल के जन सम्पर्क अधिकारी संजीव शर्मा ने बताया कि काठगोदाम से चलने वाली रानीखेत एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग संचालित होगी।

बुदियाल को एमडी का अतिरिक्त चार्ज

देहरादून। प्रमुख सचिव आर.मीनाक्षी सुन्दरम की ओर से जारी आदेशों में तीन अधिकारियों को पदमुक्त कर दिया गया। जारी आदेश पत्र में यूपीसीएल के प्रबन्ध निदेशक अनिल कुमार को तत्काल प्रभाव से प्रबन्ध निदेशक यूपीसीएल के पद से, अजय कुमार अग्रवाल को निदेशक परियोजना उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि. के पद से, संदीप सिंघल को प्रबन्ध निदेशक यूजेवीएनएल के पद से पदमुक्त किया गया। इसके अलावा प्रमुख सचिव ने प्रदेश के जल विद्युत निगम लि. के जीएम यमुना वैली प्रथम (डाकपत्थर) व निदेशक (परिचालन) पिटकुल गजेन्द्र सिंह बुदियाल को एमडी यूपीसीएल का अतिरिक्त पदभार दिया गया है।

बेरीनाग-चौकोड़ी पर निर्माण पर रोक

बेरीनाग। उच्च न्यायालय के आदेश के बाद भी बेरीनाग और चौकोड़ी में निर्माण कार्य होने की शिकायत पर एसडीएम खुशबू पाण्डे के निर्देश पर प्रशासन की टीम ने छापेमारी करते हुए दर्जनभर लोगों को नोटिस दिया। क्षेत्र पंचायत सदस्य नीरज साह ने कहा कि गुपचुप तरीके से मशीनों से खुदाई की जा रही है।

रं पुस्तकालय का नवीनीकरण

धारचूला। पंचशूल ब्रिगेड के कमाण्डर ने नगर स्थित रं पुस्तकालय का नवीनीकरण किया। आयोजित समारोह में कमाण्डेंट ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य सीमान्त क्षेत्रों में ज्ञान, शिक्षा और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना है। कहा कि सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा रं पुस्तकालय लम्बे समय से अध्ययन व ज्ञान का केन्द्र रहा है।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

होटल
माँ नन्दादेवी
एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न.
8958525979,
9411134775
फोन सम्पर्क-
05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग
मैटीरियल, जनरल आर्डर
सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

यूकेडी जोश में, कांग्रेस फिल्डिंग लगाने लगी तो क्या विपक्षी एकजुटता फुस्स होगी

विधानसभा चुनाव 2027 के लिये पूरे प्रदेश में उथल-पुथल तेज होने लगी है। सत्ता के गलियारे पर तैरने वाले भी इस बात को समझने की कोशिश कर रहे हैं कि आने वाले दिन उन्हें किस करबट बैठा देंगे। उत्तराखण्ड क्रान्तिदल पूरे जोश में है लेकिन वह सभी सीटों में प्रभावशाली होगा सह संशय है, ऐसे में यूकेडी की ओर से अभियान चलाया गया है। यूकेडी के जोश में ऐलान है कि वह सभी सीटों पर लड़ रहा है। दूसरी ओर बड़ी विपक्षी पार्टी कांग्रेस अपनी फिल्डिंग लगाने में लगी है क्योंकि इसमें ना-ना-हाँ-हाँ कहने वाले बड़े नेता अति महत्वाकांक्षी हैं। सवाल उठ रहा है कि यूकेडी का जोश और कांग्रेस की फिल्डिंग में क्या विपक्षी एकजुटता फुस्स हो जाएगी। यह तो तय मानो यदि ये दोनों पार्टियों ने तालमेल नहीं किया तो भाजपा निश्चित रूप से इसका लाभ लेगी। सबसे बलशाली पार्टी

रणनीति बनाने में जुटे हैं दिग्गज

चालबाज अपनी चाल से ढेर करेंगे

के रूप में भाजपा खड़ी और उसे ऐसे मौके की तलाश भी है जब विपक्ष लड़ मरे तो उसका अपना रास्ता सुगम हो।

राजनीति के वर्तमान सफर में भाजपा को उखाड़ने का संकल्प ले चुके नेता अपनी रणनीति बनाने में जुटे हैं। इसके लिये कांग्रेस और यूकेडी के दिग्गज भी अन्दरखाने विचार करने लगे हैं लेकिन किन सीटों को लेकर यह अकड़ जाएंगे यह भी देखने की बात है। और जब अकड़ होगी तो इनकी आपसी घमासान भी कम नहीं है। दूसरी ओर चालबाज अपनी चाल से इन्हें ढेर करने की तैयारी में जुट गये हैं।

इस बीच उक्रांद का अभियान सभा और सड़क पर प्रदर्शन के साथ जारी है। शीर्ष नेता काशीसिंह ऐरी, पुष्पेश त्रिपाठी, नारायण सिंह जन्तवाल अपनी गम्भीरता के साथ रास्ता देख रहे हैं जबकि युवा तुर्क आशीष नेगी का तूफान जोश भर रहा है। गढ़वाल में बड़े प्रदर्शनों के साथ देहरादून में यूकेडी ने सत्ता को सबक सिखाने का ऐलान किया है। लोहाघाट सहित कई जगह सभा करते हुए कहा कि सत्ता पर आने पर उक्रांद उत्तराखण्ड की मूल अवधारणा को पूरा करेगा।

दूसरी ओर भाजपा अपने संगठन की तय रणनीति के तहत चारों ओर अभियान चला रही है और जानती है कि चाहे कितना विरोध हो लेकिन विपक्ष की कमजोरी लाभ देनी वाली है।

गंगोलीहाट सीट पर खजान गुड्डू ने धुंआधार प्रचार अभियान चला रखा है

गंगोलीहाट। विधानसभा चुनाव 2027 अभी दूर है लेकिन किसी भी सूरत विधायक बनने की महत्वाकांक्षा रखने वाले पूर्व दर्जा मंत्री खजान गुड्डू ने धुंआधार प्रचार अभियान चलाकर अपनी ताकत दिखा दी है। इससे कांग्रेस संगठन में भी नई जान दिखाई दे रही है। युका तुर्क के रूप में पहचान रखने वाले नारायण सिंह बोहरा ने अपने स्तर पर पार्टी की व्यूह रचना से इसे और मजबूती दी है। पिछले दो चुनाव में वोटों के गणित में उलझ गये खजान को विधानसभा का प्रत्येक मतदाता जानता है। खजान के चुनाव मैदान में कूदने से सारे समीकरण उलट गये थे

करम राम भाजपा की डोर थाम चुके हैं

और भाजपा-कांग्रेस ने भी इनकी ताकत को माना। दो हार के बाद भी इस नेता नेता ने अपनी जिद नहीं छोड़ी और जो लोग इन्हें बाहरी कर रहे थे उन्हें जबाव देने के लिये इस बीच अपना होटल व बड़ा कार्यालय निर्माण करवा डाला। साथ ही स्थानीय युवाओं की टीमें खड़ी कर घर-घर घूमना शुरू कर दिया। बात यदि दिग्गजों की करें तो बेरीनाग के भीम कुमार कम अनुभवी नहीं हैं। उनकी मजबूत पकड़ क्षेत्र में है लेकिन किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया। गंगोलीहाट के मनोज कुमार बराबर जन मुद्दों के साथ कांग्रेस से टिकट की दावेदारी में हैं। पांखू के तेज तर्रार दिनेश आर्या रास्ता बनाने में माहिर हैं और भाजपा से टिकट की चाह रखते हैं जबकि दर्पण कुमार सोशल मीडिया द्वारा जगह-जगह प्रचार में जुटे हैं। इन सबके बीच करम राम का भाजपा में आना बड़ी बात है। सचिवालय संघ के पूर्व अध्यक्ष करम राम ने भाजपा की डोर थामते हुए जिस प्रकार से चाल चली है वह सम्भावित प्रत्याशी दिख रहे हैं।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

चैत्र नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
ॐ
चन्दन सिंह रावत
साकेत कलोनी
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

रामा एग्रो इंडस्ट्रीज
झनकट खटीमा
(उधमसिंह नगर)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)